हिन्दी अनुवाद : एक हिन्दू ब्राह्मण कुल में जन्म एवं विवाह (तेलुगु)

Born and Married and Hindu Brahmin

मैं, एम जे, एक हिन्दू ब्राह्मण कुल में जन्मी । मेरे लिए अपने पारिवारिक धर्म का कोई अधिक महत्व नहीं था । मेरी दादी धार्मि र्म-कांडों के प्रति सचेत थी तथा कभी- भी हम बच्चों को मूर्तियों की प्रतिष्ठा में नत-मस्तक होने के लिए कहा जाता था । मैं परमात्मा के प्रति सचेत थी तथा मैं सोच सोच कर हैरान होती कि परमात्मा क्या है ? परमात्मा को जानने के लिए मेरे पास इस प्रश्न के अलावा भी अन्य प्रश्न थे । एक शिलाखंड कैसे परमात्मा हो सकता है अथवा मनुष्य जाति कैसे देवी-देवताओं को परिणत कर देते हैं ? यह प्रश्न अनुत्तरित रहा ।

मेरी अपनी जाति के एक हिन्दु ब्राह्मण परिवार में मेरा विवाह हुआ । मेरे पति मूर्ति-पूजा के बड़े उपासक थे । यद्यपि मैं उनके साथ मंदिर दर्शनार्थ जाती थी, फिर भी मेरे मन-मस्तिष्क में उथल-पुथल मची रहती तथा मैं कभी संतुष्ट नहीं हो पाती । अपने प्रिय पति तथा दो प्यारे बच्चों के होते हुए भी मेरे जीवन में रिक्तता ही छायी रहती । मैं मूक रूप से परमात्मा की तलाश में रहती । मेरे हृदय ने कभी मूर्ति-पूजा की अनुमति नहीं दी और जहां मूर्ति-पूजा होती थी उन मंदिरों में मैने अपने पति के साथ लगभग जाना छोड़ दिया ।

वर्ष 1992 में अमेरिका से मेरे बड़े भाई अपने परिवार सहित हमारे घर आए । मेरे भाई अमेरिका में अध्ययन हेतु गए थे तथा अब वे वहीं बस गए हैं । उन्होंने ईसा-मसीह ा मा-ा तथा एक ईसाई बन गए । हमारे साथ रहते हुए वे मेरे तथा मेरे परिवार के साथ ईसाई धर्म के सिद्धांतों पर चर्चा करते रहते थे । ईसाई धर्म में उनकी आस्था के बल पर मैं बहुत प्रभावित हुई तथा उनके जीवन में हुए परिवर्तन को मैनें देखा । मूर्ति-पूजा को लेकर मैं हैरान थी कि क्या मैं सही कर रही हूँ अथवा नहीं । मेरे भाई ने मुझे बताया कि परमात्मा ने बाइबल में स्वयं रहस्योद्घाटन किया है कि उनके पुत्र ईसा में आस्था प्रकट करते हुए इस पृथ्वी पर स्वर्गिक जीवन सुख व्यतीत करते हुए रहने का मार्ग प्रशस्त किया है । मैनें उन्हें एक बाइबल की प्रति भेजने का अनुरोध किया । उन्होनें मुझे एक प्रति भेजी तथा ईसा तथा परमात्मा के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए बाइबल पढ़ना शुरू किया ।

अत: ईसाई पूजा-पाठ किस प्रकार करते हैं, यह जानने के लिए मैंने गिरिजाघरों में जाना शुरू किया । मेरे भाई ने मुझे वर्ष 1993 में मुझे अमेरिका आने के लिए आमंत्रित किया तथा वहां पहुंचने के उपरांत पहली बात मैने उसे कही वह थी चर्च ले जाने की । पहले रविवार, मैं अपने भाई के साथ उनके गिरिजाघर अर्थात् ग्रेस वैली क्रिस्चियन सेंटर, डेविस, सी ए, में गई । पूजा-पाठ के दौरान मेरे हृदय में मेरी अन्तर्रात्मा ने कहा कि मैं सच्चे तथा पवित्र प्रभु की शरण में हूँ । मैंने अनुभव किया कि गुनाहगार होते हुए भी ईसा मुझसे प्रेम करते हैं तथा केवल वे ही मेरे गुनाह माफ कर सकते हैं तथा इनसे मुझे मुक्त कर सकते हैं । जब मैंने इसे अपने भाई को बताया तो वह मुझे सम्मानीय पी जी मैथ्यू, ग्रेस वैली के वरिष्ठ धर्म गुरू के पास ले गए जिन्होंने मुझे ईसाई धर्म के सिद्धातों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया ।

जब मैंने अपने हृदय तथा मन से ईसा का उद्धारक तथा स्वामी के रूप में अपनाने का दृढ़ निश्चय कर लिया, तो मैथ्यू धर्म पुरोहित ने कहा - आपके पति हिन्दू ब्राह्मण हैं, जब आप ईसा को अपने उद्धारक तथा स्वामी के रूप में अपना लेंगे तो क्या आपके पति आपको स्वीकार करेंगे ? मैंने उन्हें उत्तर दिया कि मेरा खुदा मेरी रक्षा करेगा तथा मेरी देख रेख करेगा । धर्म गुरू मैथ्यू ने मैथ्यू की पुस्तक से, 11वें अध्याय, कविता 28 पढ़ी *आप सब जो इस जीवन में हतोत्साहित हैं तथा बोझ से दबे हैं, मेरी शरण में आओ, मैं आप सबको विश्राम प्रदान करूंगा *। तुरन्त उसी समय मैंने ईसा को अपना व्यक्तिगत मुक्तिदाता स्वीकार कर लिया ।

इस प्रकार सितम्बर, 1993, में मैंने ईसाई धर्म तथा जीवित परमात्मा ईसा मसीह के पुत्र के रूप में स्वी□ार कर लिया । तब से मेरे हृदय में शांति तथा आनन्द है । अमेरिका में अपनी छुट्टियां बिताने के बाद मैं नवंबर, 1993 में भारत लौट आई, जीवन परिवर्तित हो चुका था । मैंने यह बात अपने पति तथा दोनों बच्चों को बताई तथा उनके लिए प्रार्थना करनी शुरू की । यद्यपि मैं अकेले ही प्रार्थना करती थी, ईश्वर ने मुझे सभी कठिन परिस्थितियों को जो एक ईसाई धर्म में आस्था रखने वाला अकेला व्यक्ति एक ब्राह्मण घर में व्यवहार करने पर सामना करता है, सहने की शक्ति दी । यह ईसा में आस्था का मेरा परीक्षण काल था । ईश्वर की कृपा से मैंने इन सभी कठिन परिस्थितियों पर विजय प्राप्त की । मेरा भाई, धर्म गुरू मैथ्यू तथा ग्रेस वैली चर्च में सभी भाई तथा बहनों ने मुझे प्रोत्साहित किया तथा वे सब

मेरे तथा मेरे परिवार के लिए प्रार्थना करते थे ताकि मैं सभी कष्टों के बीच ईसा की आस्था में एक सफल जीवन व्यतीत कर सकुं ।

ईश्वर ने मुझे विभिन्न प्रकार से आशीष बख्शी है । मेरे पति तथा मेरे दोनों पुत्रों ने फरवरी, 1996 में जीसस को अपने उद्धारक के रूप में स्वीकृति दी । हम सब एक उल्लासमयी, शांतिपूर्ण तथा समृद्ध पारिवारिक जीवन व्यतीत कर रहे हैं । हम ईसा में आस्था रखते हैं तथा अब कोलकाता के गिरजाघर में पूजा-पाठ करते हैं । हम प्रभु जीसस के प्रति अपनी आस्था रखते हुए प्रतिदिन आगे बढ़ रहे हैं तथा इस आस्था में दृढ़ होते जा रहे हैं । चमत्कार करने वाले उस प्रभु की हम प्रंशसा करते हैं । सच्चे, प्रेम करने योग्य तथा सबका पालन करने वाले प्रभु को जानने तथा उसकी तलाश में लगे अपने सभी मित्रों को यह मेरा प्रमाण है । यह ईसा है जिन्होंने मेरे गुनाहों को कलवारी सलीब पर लिया तथा अब तथा सदा स्वर्ग में उनके साथ रहने के लिए शांति एवं आनन्द प्रदान किया । तथास्तु ।

एम जे, कोलकाता, भारत ।